Edition : August 2022/005 Price : Free

# मातृका MAATRIKA

A CORE SHARADA TEAM FOUNDATION INITIATIVE — REINCARNATION OF THE SHARADA SCRIPT

Download Our Free "Satisar" Andriod app

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

**Inside :-**


Page 1 — Editor's Foreword-Resserection of Sharada

Page 2 — Saints of Kashmir by A.K. Razdan

Page 3 — Isha Upnishad (Shaloka 3) by AK Razdan

Page 4 — 1) Az Vati - Poem by Master Zinda Kaul; 2) Sashtang Pranam by CST; 3) Collection of Single Verses By Shridhar Bhatt

Page 5 — Shastravidya & Shaastravidya by Brijesh Kashyap

Page 6 — 1) Contd. article; 2) HIstory of Sharada By Rakesh Kaul

Page 7 — Gyan Reh By Kophur

Page 8 — Bhartiya Pracheen Lipiyan by Kumud Hegde

Page 9 — Pandrethan Temple by CST

Page 10 — Ksemaraja By Radha Ragunathan

Page 11 — 1) Artwork for the month on Social media.; 2) Donation appeal.; 3) Contact Details.; 4) Activity Chart of previous month.; 5) Sharada Varnmala





अमरनाथ गुफा में बर्फ़ से बने शिव लिंग को भगवान शिव का प्रतीक माना जाता है । यहीं पार्वती को शिवाजी ने अमरत्वका रहस्य बताया था। यह हिंदुओं के लिये एक उच्च कोटिका धर्म स्थल माना जाता है ।

**LEARN SHARADA TEACH SHARADA**

संस्कृति और सभ्यता को जानने की एक पहल

**PRESERVE-PROTECT - PROPAGATE**

Chief Editor:- Kuldip Dhar
Cover picture :- Parul Bradoo
Designed by Sunil Mahnoori
Supporting Editors :- Veronica Peer, Parul Bradoo

By:- Kuldip Dhar

# Editorial

## शारदा लिपि का पुनर्जीवन- कोर शारदा समूह का एक प्रयास

“बूँद बूँद से बने सागर”

“बूँद बूँद से बने सागर”

शारदा लिपि के ९ चाहने वाले अपने जोशीलेपन व निष्ठा से इकट्ठे हुए ओर इस लिपि को सीखीने का प्रयास किया। यहाँ से एक यात्रा आरंभ हुवी, शारदा लिपि को लुप्त श्रेणी से बाहर निकालने ओर वह स्थान दिलाने की जिस की वह हक़दार है। यह प्रण किया कि इस लिपि को वह विश्वभर में लोकप्रिय बनाने का निरंतर प्रयास करते रहें गे। इन्होंने अपना नाम Core Sharada Team (CST) “ कोर शारदा समूह ”( को.शा.स.) रखा।

स्वयं सीखने के उपरांत नवंबर २०१३ में पहली कार्यशाला जम्मू में आयोजित की। इस के तुरंत बाद फ़रीदाबाद में भी ऐसा ही कार्यक्रम आयोजित किया गया। शारदा सिखाने का कार्य चलता रहा। एप्रिल २०१५ से गोरी त्रितिया के दिन को.शा.स. ने शारदा दिवस मनाना आरंभ किया। एप्रिल २०१९ में शारदा लिपि के लिये प्रायमर भाग १ व २ प्रकाशित किये गये। वर्ष २०२० ने शारदा लिपि को बहुत लोकप्रिय बनाया। फेब्रवरी २०२० में स्व० दीनानाथ कोल की लिखी एक कविता भारतीय केंद्रीय बजट के लिये को.शा.स. ने शारदा में लिखी। इसी वर्ष एप्रिल में ७०० संस्कृत विध्वानों को १६ दिन के एक कार्यक्रम में शारदा लिपि सिखायी गई। यह कार्यक्रम व्योमा लैबस, बैंगलोर की सहायता से आयोजित किया गया। इसी वर्ष दिसंबर में को.शा.स. को श्री राकेशजी कोल के नेतृत्व में कंपनी ऐक्ट खंड ८ के अंतरगत एक गैर सरकारी निर्लाभ संगठन की मान्यता प्राप्त हुई। वर्ष २०२१ पिछले वर्ष से भी अधिक सराहनीय रहा ।

एप्रिल में सतीसर नाम का फोंट को.शा.स. ने अपने अंथक प्रयासों से शारदा प्रेमि यों व विद्वानों को भेंट में दिया । ओर वर्ष के अंतिम माह में सतीसर एप ऐनड्राय्ड उपयोगकर्ताओं के लिये बनाई गई। इन प्रयासों से शारदा लिपि में लिखना सह ज हुआ । कहा जाये तो यह वर्ष शारदा लिपि को पुनर्जीवित करने के प्रयासों का स्वर्णिम वर्ष रहा । यह को.शा.स. के पिछले कयी वर्षों की अंथक प्रयासों के कारण हो पाया। कोर शारदा समूह के प्रयास २०२२ में भी ओर गति पकड रहे हैं। फ़रवरी माह में पहली बार शारदा की पत्रिका “मातृका “ का प्रकाशन सतीसर फोंट के प्रयोग में लाने के कारण संभव हुवा। अब तक इस के ४ संस्करण प्रकाशित हुए हैं । इसी माह ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के सहयोग से को.शा.स. ने ८ देशो में शारदा लिपि की एक ओनलाय्न कार्यशाला का आयोजन किया गया । जून में कश्मीरी प्रवेशिका के नाम से कश्मीरी भाषा को शारदा में सीखने के लिये एक पुस्तक का प्रकाशन किया। इस के पीछे दो साल के कठिन प्रयास रहे जिस में बहुत शारदा प्रेमियों की भूमिका रही। २०१४ से आज तक को.शा.स. ने लगभग ४००० विद्यार्थियों को शारदा लिपि सिखाने कार्य किया जो कि अभी भी चल रहा है। को.शा.स. के पास लगभग ३० प्रभावशाली शिक्षक है ।यहाँ यह बताना आवश्यक है कि सभी विद्यार्थियों व अध्यापकों को यह शिक्षा निशुल्क दी गई ओर आज भी निःशुल्क दी जा रही है। मातृका भी निःशुल्क बांटी जा रही है । पुस्तकों को छोड़, सारी शारदा को सीखने, लिखने की सुविधायें निःशुल्क दी जा रही है । कोर शारदा समूह के एक प्रारम्भिक सदस्य श्री संजय पंडिताजी ने जम्मू में शारदा सिखाने का कार्य मार्च २०२० में प्रारंभ किया। यह केंद्र अब संजीवनी शारदा केंद्रके नाम से जाना जाता है। इस संस्थान ने अब तक १८०० विद्यार्थियों को शारदा लिपि पड़ने लिखने का प्रक्षिशन दिया ओर ४० के क़रीब शिक्षक तयार किये हैं । यह संस्था जम्मू के स्थानीय शालाओं में शिक्षकों को शारदा लिपि सिखाने का कार्य भी कर रही है ।

एस. एस. के. ने हिमाचल प्रदेश की केंद्रीय विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन किया है जिस के अंतर्गत एस. एस. के. शिक्षक निःशुल्क उपलब्ध करायेगी ओर विश्वविद्यालय एक वर्ष का डिलोमा कोर्स चलाये गी। इसी के अंतर्गत पहला बैच अपनी पडाई पूरी कर चुका है और इन की परिक्षा भी हो चुकी है। जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय एस. एस. के. के सहयोग से एक सर्टिफिकेट कोर्स पिछले दो वर्ष से चला रही है जिस में ब्रहमी व शारदा पडाई जा रही है।

अगर ऐसा लिखा जाये कि को.शा.स. ने अब एक आंदोलन का रुप धारण किया है तो गलत नही होगा। इस का कारण हमारे साथ अब सभी विध्यार्थी व शिक्षक किसी न किसी भूमिका में जुडे है। हम विष्वास के साथ यह कह सकते हैं कि अब यह लिपि कभी लुप्त नही होगी। सतीसर शारदा कीबोर्ड इस लिपि को पंख देने का कार्य कर रहा है ओर करेगा। बहुत सारे दुर्लभ ग्रंथों का अब को.शा.स. के प्रयासों से लिप्यंतरण हो रहा है। कई विश्वविध्यालय अब शारदा को परोत्साहन देने के इछुक हैं । को.शा.स. भी ऐसे विध्यार्थियों को धन राशी के रूप में सहाता करने की इछुक हैं जो शारदा लिपि में शोद्ध करना चाहते हैं । को.शा.स. के यह प्रयास निरंतर चलते रहेंगे। स्वयं में अपने आप को को.शा.स. के साथ जुडने को मा शारदा के आशिर्वाध के रूप में देखता हूं।

कुलदीप धर

By:- A.K.Razdan

# काश्मीर के महान सन्तों की श्रृंखला में इस मातृका में स्वामी कृष्णजुव राज़दान

महात्मा श्री कृष्ण जू राज़दान छि कंशीरि हुंद्य अख थदिपायिक्य भक्त माननु यिवान। यिमव छि लगभग ३५० भक्ति लीलायि लेछिमच्च। राज़दान सांबन ओस कशिरि हुनुंदिस वनपुह गामस मंज़ अगस्त १८५० ईसवीयस मंज़ जन्म ह्योतमुत। यिमन आंस लोकचारु प्यठय भगवत नावस कुन लोय तु खोय। यिमव ह्योत स्वामी मुकुन्दजू तिक्कू सांबुन गॅरमोख तु ह्यतुख बडि लयि सान आध्यात्मिक अध्ययन करुन तु सुती ह्योतुख नस्तालिक लिपि मंज़ कांशुर्य बजन तु लिलायि लेखनि। चूंकि कांशरेन माज्यन बेन्यन ओस नु नस्तालिक लिपि हुंज़ लोय खोय तवय गयि नु यिहुंज़ु वारियाह लीलायि आम लूकन मंज़ ज़्यादु प्रचलित। अज़कल छि यिहुंद्य सांरी बजन तु लीलायि देवनागरी लिपी मंज़ वॅपल्बद। हालांकि राज़दान सांबन छु आम लूकन फिकरि तरवुनिस कांशिरस मंज़ पनुन कलाम वोनमुत मगर तोति छु कॅन्च़न बजनन मंज़ तिमव स्यठाह सोन तु गूड फलसफ़ वोनमुत। शिव पार्वती लगुन तु खान्दरुच दलील छु तिमव बड़ु व्यस्तारु पांठ्य वेछनांवमुच़ यथ मंज़ द्वारपूज़ा,लगुन, पोशिपूज़ा, मननमाल, बरात वापसी पूरु पूरु पांठ्य छु तिमव वेछ़-नांविथ लिलायि रूपस मंज़ कलमबन्द करमुच़। यिहुंज़ु लीलायि छि प्रार्थना, भक्ति यूग, कर्मयूग, ग्यान यूग तु गूढ आध्यात्मिक वोपदीशन प्यठ आदारित। राज़दान सांबनि शिव लीला, कृष्नु लीला, रामलीला छि आम कांशुर्य बजि श्रद्धायि सुत्य ग्यवान।

**यिहुंज़ शिव लीला ...**

होश दिम लगयो पंपोश पादन
हा सादन हुन्दि सादो हो...

**या कृष्नु लीला...**

बालक अवस्थायि लगयो बो
मन मंज़लिस मंज़ करय हो हो।
बालकृष्ण छालु मारान यितुमो
गोपालु नन्दलालु सुत्य नितमो

**या श्री नारायण लीला**

असि क्याज़ि गछ़ि छलछांगुरि मन
नरकु मंज़ मॅकलावि नारायण,
असि कोनु याद प्यव तससुंदुय नाव
यस निशि शून्य मंज़ प्रथ कॅह द्राव....

राज़दान सांबन लॅब पनुनि हयाती मंज़ुय वारयाह महशूरी। तिमन निश आंस्य कशीरि हुंद्य राज़ु महराजा प्रताप सिहं वनुपुह, युहुन्द दर्शुन करनि गछान। यि मायिनाज़ कांशुर संत कवि गव नवम्बर १९२५ मंज़ यमि संसारॅफानि निश वैकुंठदामस कुन प्रसथान करिथ।

By :- A.K.Razdan

# श्री ईशावास्य उपनिषद् (श्लोक - ३ )/

**असूर्या नाम ते लोका अन्देन तमसावृताः।**
**तागंस्ते प्रत्याभ्गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥**

"अपने जीवन यात्रा मैं जो मनुष्य आत्मा का हनन करने वाले होते हैं, चाहे वह कोई भी हो, उन लोकों मैं अवश्य प्रवेश करते हैं जो अश्रद्धालुओं के जगत के नाम से विख्यात है और अंधकार तथा अज्ञान से भरे हैं।"

मनुष्य जीवन अपने भारी उत्तरदायित्वों के कारण पशु जीवन से भिन्न होता है। जो मनुष्य इन दायित्वों से अवगत हैं ओर उसी भाव से कार्य करते हैं, वे सुर ( दैवी व्यक्ति) कहलाते हैं ओर जो इन दायित्वों की अवहेलना करते हैं वे असुर कहलाते हैं। ईशावास्योपनिषद् के पहले श्लोक में हम को त्याग मार्ग पर चलने वालों के लिये दिये गये निर्देश के बारे मे बताया गया, दूसरे श्लोक में कर्म मार्ग पर चलने वाले भक्तों के लिये निर्देशों की व्याख्या की गई। जो इन दोनों मार्गों का परित्याग करके जीवन व्यतीत करता है यह तीसरा श्लोक ऐसे मनुष्यों के बारे में कहता है कि ऐसे मनुष्य अपनी ही आत्मा का हनन करते हैं, आत्म घात करते हैं। यह मनुष्य न अपने लिए अपितु पूरे समाज के लिये अहित का कारण बनते हैं॥ ऋग्वेद में कहा गया है कि सुर सदैव ईश्वर को लक्ष्य बनाकर कर्म करते हैं ओर उन का मार्ग सूर्य के पथ के समान दीप्यमान रहता है। बुद्धिमान मनुष्यों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि आत्मा को मानव शरीर देहांतरण के चक्र में लाखों वर्षों के विकास के पश्चात प्राप्त होता है। इस भौतिक जगत की तुलना अगर एक समुद्र से की जाए तो मानव शरीर एक नाव के समान है। अगर हम कुशल नाविक बन कर इस समुद्र को पार करेंगे तो हम बिना कष्ट के पार लग सकते हैं। यदि मनुष्य अपने जीवन का पूर्ण उपयोग आत्म साक्षात्कार के लिए नहीं कर पाता तो उसे आत्महा अर्थात् आत्मा का हनन करने वाला समझना चाहिए। श्रीईशोपनिषद् स्पष्ट रूप से चेतावनी देता है कि आत्मा के हत्यारे के लिए सदा दुख भोगने के लिए अज्ञान के गहनतम अंधकार में प्रवेश करना निश्चित है।

इस से निष्कर्ष यह निकलता है कि मनुष्य होने के नाते हम केवल आर्थिक समल्याओं के

डावाँडोल धरातल पर हल करने के लिए नहीं बने हैं, अपितु प्रकृति के नियमों द्वारा जिस भौतिक जीवन में हम ला पटके गए हैं, उसकी सारी समस्याओं का आध्यात्मिक तरीक़े से हल करने के लिए हम को सदैव तत्पर रहना चाहिए॥

By :- Master Zinda Kaul

## "अज़ वाति" / "𑆃𑆘𑇊 𑆮𑆳𑆠𑆴"

संजीवनी शारदा केंद्र (शारदा विभाग)- जम्मू

१. अज़ वाति बूज़ुम मोल म्योन, कोसम वतन वॅथरावुसय।
२. लछ ज़न डुविथ संताप पाप, अनताहकरन गरु नावुसय।। अज़...
३. ठोकुर कुठिस मंज़ रंगु रुत, प्रंग आदरुक पारावुसय।अज..
४. सोमरिथ रॅसिल्य रुत्य कर्मु फल, मस खास्य बर्य बर्य थावुसय।
५. अंश्य गंगुवानि खोॅर छलस, रुमालि गुमु वॅथरावुसय।।
६. तिम पाद हृदयस पेठ रटिथ, दोख दांद्य ज़नमुक्य बावुसय।
७. कॅछि केथ रछुन लॅकचारुकुय, सोमरिथ च़ेतस अज़ पावुसय।
८. बावुक गनेर लोलुक सनेर, वांलिंज मुच़रिथ हावुसय।
९. नोव नागरादस सोंथ ज़न, स्नेह मायि हुंद वुज़ुनावुसय।
१०. गॅरु बावनाये सुत्य शेर, नोमरिथ खॅरन तल त्रावुसय।
११. गरु बार तय आसुन बसुन, सोरुय पनुन पुशुरावसय।
१२. गटु पछि च़न्दुर ज़न नाम रूप, अख अख कला वेगुलावसय।
१३. सिरयस अन्दर लय प्रावि ज़ून, सारेय बनन तिछ़ मावुसय।।

𑇑. 𑆃𑆘𑇊 𑆮𑆳𑆠𑆴 𑆧𑆷𑆘𑇊𑆶𑆩 𑆩𑆾𑆬 𑆩𑇀𑆪𑆾𑆤, 𑆑𑆾𑆱𑆩 𑆮𑆠𑆤 𑆮𑆡𑆫𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅
𑇒. 𑆬𑆗 𑆘𑇊𑆤 𑆝𑆶𑆮𑆴𑆡 𑆱𑆁𑆠𑆳𑆥 𑆥𑆳𑆥, 𑆃𑆤𑆠𑆳𑆲𑆑𑆫𑆤 𑆓𑆫𑆶 𑆤𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇆 𑆃𑆘𑇊...
𑇓. 𑆜𑆾𑆑𑆶𑆫 𑆑𑆶𑆜𑆴𑆱 𑆩𑆁𑆘𑇊 𑆫𑆁𑆓𑆶 𑆫𑆶𑆠, 𑆥𑇀𑆫𑆁𑆓 𑆃𑆢𑆫𑆶𑆑 𑆥𑆳𑆫𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅𑆃𑆘..
𑇔. 𑆱𑆾𑆩𑆫𑆴𑆡 𑆫𑆱𑆴𑆬𑇀𑆪 𑆫𑆶𑆠𑇀𑆪 𑆑𑆫𑇀𑆩𑆶 𑆦𑆬, 𑆩𑆱 𑆒𑆳𑆱𑇀𑆪 𑆧𑆫𑇀𑆪 𑆧𑆫𑇀𑆪 𑆡𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅
𑇕. 𑆃𑆁𑆯𑇀𑆪 𑆓𑆁𑆓𑆶𑆮𑆳𑆤𑆴 𑆒𑆾𑆫 𑆗𑆬𑆱, 𑆫𑆶𑆩𑆳𑆬𑆴 𑆓𑆶𑆩𑆶 𑆮𑆡𑆫𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇆
𑇖. 𑆠𑆴𑆩 𑆥𑆳𑆢 𑆲𑆸𑆢𑆪𑆱 𑆥𑆼𑆜 𑆫𑆛𑆴𑆡, 𑆢𑆾𑆒 𑆢𑆳𑆁𑆢𑇀𑆪 𑆘𑇊𑆤𑆩𑆶𑆑𑇀𑆪 𑆧𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅
𑇗. 𑆑𑆗𑆴 𑆑𑆼𑆡 𑆫𑆗𑆶𑆤 𑆬𑆑𑆖𑆳𑆫𑆶𑆑𑆶𑆪, 𑆱𑆾𑆩𑆫𑆴𑆡 𑆖𑇊𑆼𑆠𑆱 𑆃𑆘𑇊 𑆥𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅
𑇘. 𑆧𑆳𑆮𑆶𑆑 𑆓𑆤𑆼𑆫 𑆬𑆾𑆬𑆶𑆑 𑆱𑆤𑆼𑆫, 𑆮𑆳𑆁𑆬𑆴𑆁𑆘 𑆩𑆶𑆖𑇊𑆫𑆴𑆡 𑆲𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅
𑇙. 𑆤𑆾𑆮 𑆤𑆳𑆓𑆫𑆳𑆢𑆱 𑆱𑆾𑆁𑆡 𑆘𑇊𑆤, 𑆱𑇀𑆤𑆼𑆲 𑆩𑆳𑆪𑆴 𑆲𑆶𑆁𑆢 𑆮𑆶𑆘𑇊𑆶𑆤𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅
𑇑𑇐. 𑆓𑆫𑆶 𑆧𑆳𑆮𑆤𑆳𑆪𑆼 𑆱𑆶𑆠𑇀𑆪 𑆯𑆼𑆫, 𑆤𑆾𑆩𑆫𑆴𑆡 𑆒𑆫𑆤 𑆠𑆬 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇅
𑇑𑇑. 𑆓𑆫𑆶 𑆧𑆳𑆫 𑆠𑆪 𑆃𑆱𑆶𑆤 𑆧𑆱𑆶𑆤, 𑆱𑆾𑆫𑆶𑆪 𑆥𑆤𑆶𑆤 𑆥𑆶𑆯𑆶𑆫𑆳𑆮𑆱𑆪𑇅
𑇑𑇒. 𑆓𑆛𑆶 𑆥𑆗𑆴 𑆖𑇊𑆤𑇀𑆢𑆶𑆫 𑆘𑇊𑆤 𑆤𑆳𑆩 𑆫𑆷𑆥, 𑆃𑆒 𑆃𑆒 𑆑𑆬𑆳 𑆮𑆼𑆓𑆶𑆬𑆳𑆮𑆱𑆪𑇅
𑇑𑇓. 𑆱𑆴𑆫𑆪𑆱 𑆃𑆤𑇀𑆢𑆫 𑆬𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆮𑆴 𑆘𑇊𑆷𑆤, 𑆱𑆳𑆫𑆼𑆪 𑆧𑆤𑆤 𑆠𑆴𑆗𑇊 𑆩𑆳𑆮𑆶𑆱𑆪𑇆

By :-CST

## साष्टांग व पंचांग प्रणाम / 𑆱𑆳𑆰𑇀𑆜𑆳𑆁𑆓 𑆮 𑆥𑆁𑆖𑆳𑆁𑆓 𑆥𑇀𑆫𑆟𑆳𑆩

इस शिल्प से ध्यात होता है कि पुरुषों को आष्टांग (साष्टांग) प्रणाम करना चाहिये ओर स्त्रियों को पंचांग प्रणाम करना चाहिये। आष्टांग प्रणाम मैं- हाथ (2), छाती (1), सिर (1), गुठने (2), पाऊं (2) पृथ्वी को स्पर्श करते हैं। पंचांग प्रणाम मैं - हाथ (2), सिर (1), पाऊं (2) पृथ्वी को स्पर्श करते हैं।



**उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा ।**
**पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग उच्यते ॥**

हृदय,मस्तक,नेत्र,मन,वाणी,चरण,हस्त और घुटने से शरणागत होने को अष्टांग प्रणाम कहते हैं। Meaning : Touching the ground (prostration) with our chest (Heart), headfeet, hands and knees in addition to our mind and eyes is called Sashtaanga pranaam.

𑆇𑆫𑆱𑆳 𑆯𑆴𑆫𑆱𑆳 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑇀𑆪𑆳 𑆩𑆤𑆱𑆳 𑆮𑆖𑆱𑆳 𑆠𑆡𑆳𑇅
𑆥𑆢𑇀𑆨𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆑𑆫𑆳𑆨𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆘𑆳𑆤𑆶𑆨𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆟𑆳𑆩𑆾𑇁𑆰𑇀𑆜𑆳𑆕𑇀𑆓 𑆇𑆖𑇀𑆪𑆠𑆼𑇆



By :- Shridharji Bhatt

## A collection of scriptures in single verse

All of us know - In Hinduism there are many big and famous Indic Texts like - Ramayana, Mahabharata and Bhagavata etc. Here such big scriptures are given in just one verse each. All the four verses are written in shardula vikridita / शार्दूल विक्रीडित वृत्: - Varna/ वर्ण chandas. We will have a look at all of them in our upcoming editions.

**महाभारतम् ||**

**आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनं**
**द्यूते श्रीहरणं वने वहिरणं मत्स्यालये वर्धनम् |**
**लीलागोग्रहणं रणे वतिरणं सन्धिक्रियाजृम्भणं**
**भीष्मद्रोणसुयोधनादमिथनं एतन्महाभारतम् ||**

𑆩𑆲𑆳𑆨𑆳𑆫𑆠𑆩𑇀 ||

𑆃𑆢𑆿 𑆥𑆳𑆟𑇀𑆝𑆮𑆣𑆳𑆫𑇀𑆠𑆫𑆳𑆰𑇀𑆜𑇀𑆫𑆘𑆤𑆤𑆁 𑆬𑆳𑆑𑇀𑆰𑆳𑆓𑆸𑆲𑆼 𑆢𑆳𑆲𑆤𑆁
𑆢𑇀𑆪𑆷𑆠𑆼 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆲𑆫𑆟𑆁 𑆮𑆤𑆼 𑆮𑆴𑆲𑆫𑆟𑆁 𑆩𑆠𑇀𑆱𑇀𑆪𑆳𑆬𑆪𑆼 𑆮𑆫𑇀𑆣𑆤𑆩𑇀 |
𑆬𑆵𑆬𑆳𑆓𑆾𑆓𑇀𑆫𑆲𑆟𑆁 𑆫𑆟𑆼 𑆮𑆴𑆠𑆴𑆫𑆟𑆁 𑆱𑆤𑇀𑆣𑆴𑆑𑇀𑆫𑆴𑆪𑆳𑆘𑆸𑆩𑇀𑆨𑆟𑆁
𑆨𑆵𑆰𑇀𑆩𑆢𑇀𑆫𑆾𑆟𑆱𑆶𑆪𑆾𑆣𑆤𑆳𑆢𑆩𑆴𑆡𑆤𑆁 𑆍𑆠𑆤𑇀𑆩𑆲𑆳𑆨𑆳𑆫𑆠𑆩𑇀 ||

(With) the birth of sons of Pandu and Drthrashtra and of burning alive Pandavas in a wax house, Wealth grabbed illegally, exile in forests (of Pandavas), retreat in the house of Matsya (Kingdom) cows stolen and rescued, in battle, Attempts for compromise (between the Pandavas and Karavas by Lord Krishna) failed, Bhishma, Drona Duryodhana and others killed, is MAHABHARATA . This Indic Text has 18 different chapters,containing 125000 verses. The philosophy of Bhakti is contained in Mahabharata explained in Bhagavadgita which also has 18 chapters. Bhagavadgita explains Purushartha-1. Dharama 2. Artha 3. Kama and 4. Moksha.

By :- Brijesh Kashyap

# शस्त्रविद्या एवं शास्त्रविद्या / 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆍𑆮𑆁 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳

भारतीय चिन्तन परम्परा में विकसित विद्याओं का विभाग अनेक प्रकार से किया गया है। जिनमें एक विभाग यह भी है कि समस्त विद्याओं को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। प्रथम – शस्त्रविद्या, तथा द्वितीय – शास्त्रविद्या। शस्त्रविद्या शब्द का तात्पर्यार्थ यहां पर ऐसा समझना चाहिए कि – जो भी सामाजिक तथा राष्ट्रीय सुरक्षा की साधनभूत विद्याएं हैं, तथा जिनमें बौद्धिक बल के साथ ही साथ शारीरिक बलों का भी साक्षात् अनुप्रयोग सामरिक सामग्रियों के सञ्चालन के निमित्त किया जाता था। जैसे कि धनुर्वेद आदि। किन्तु कालभेद से इसमें महान् अन्तर हो सकता है। जैसे कि आज के परिप्रेक्ष्य में इसे परमाणुओं से लेकर सूचना एवं नैरटिव वार और फिर तकनीकी तंत्र के वार तक के रूप में परिवर्तित होता देखा जा सकता है। और शास्त्रविद्या का तात्पर्य समस्त बौद्धिक सांस्कृतिक आध्यात्मिक धार्मिक दार्शनिक इत्यादि क्षेत्रों के अनुभवों से प्रसूत विद्या समझना चाहिए। जैसे कि न्याय, व्याकरण, अलङ्कार इत्यादि।

यदि हम यह प्रश्न करें कि क्या कोई समाज इनमें से किसी एकमात्र विद्या से सञ्चालित हो सकता है तो भारतीय मनीषा का स्पष्ट उत्तर होगा नहीं। जिसकी पुष्टि में हम श्रीपरशुराम श्रीराम श्रीकृष्ण इत्यादि ऋषियों तथा भगवान् के अवतारों का भी उदाहरण देख सकते हैं। समस्त राजपुरुषों की परम्परा तथा ऋषियों की परम्परा में शस्त्र तथा शास्त्र की अविखण्डित समुपासना के आख्यानों से सारे इतिहास पुराण आदि ग्रन्थ भरे पड़े हैं। इसी तथ्य के समर्थन में अर्थात् शस्त्रविद्या तथा शास्त्रविद्या के सामञ्जस्य की चरितार्थता के रूप में हम निम्नलिखित उक्ति को देख सकते हैं –

अग्रतः सकलं शास्त्रं पृष्ठतः सशरं धनुः।

अब यदि हम इन दोनों विद्याओं (शस्त्रविद्या तथा शास्त्रविद्या में) तुलना द्वारा किसी एक की श्रेष्ठता का विचार करें तो यह यद्यपि परमार्थतः तो सम्भव नहीं है। तथापि तर्क दोनों ही पक्ष के समर्थन में उपलब्ध हैं।

शास्त्रविद्या की अपेक्षा शस्त्रविद्या की अधिक महत्ता –

इस पक्ष के तर्क के अनुसार शास्त्रविद्या की अपेक्षा शस्त्रविद्या ही अधिक उत्कृष्ट विद्या है। चूँकि शस्त्रविद्या से सुरक्षित राष्ट्र में ही शास्त्र सुरक्षित हो सकता है।

स्वभावात् शस्त्रविद्यायाः शास्त्रविद्या कनीयसी।

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचिन्ता प्रवर्त्तते॥

[अनुवाद – शास्त्रविद्या स्वभावतः ही शस्त्रविद्या से छोटी है। (चूँकि) शस्त्र द्वारा संरक्षित राष्ट्र में ही शास्त्र का चिन्तन प्रवृत्त हो सकता है।]

शस्त्रविद्या की अपेक्षा शास्त्रविद्या की महत्ता –

इस पक्ष के तर्क के अनुसार शस्त्रविद्या की अपेक्षा शास्त्रविद्या ही अधिक उत्कृष्ट विद्या है। चूँकि शस्त्रविद्या तो जब सामर्थ्य अपने प्रौढि में होता है उस युवावस्था में ही शोभा देती है। किन्तु वृद्धावस्था में शरीर के शिथिल होने पर उपहास का कारण बन जाती है। किन्तु शास्त्र विद्या तो अधिगत होने पर उत्तरोत्तर समृद्ध होती हुई सर्वदा ही आदर का कारण बनती है।

𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪 𑆖𑆴𑆤𑇀𑆠𑆤 𑆥𑆫𑆩𑇀𑆥𑆫𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆴𑆑𑆱𑆴𑆠 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆏𑆁 𑆑𑆳 𑆮𑆴𑆨𑆳𑆓 𑆃𑆤𑆼𑆑 𑆥𑇀𑆫𑆑𑆳𑆫 𑆱𑆼 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆓𑆪𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆘𑆴𑆤𑆩𑆼𑆁 𑆍𑆑 𑆮𑆴𑆨𑆳𑆓 𑆪𑆲 𑆨𑆵 𑆲𑆽 𑆑𑆴 𑆱𑆩𑆱𑇀𑆠 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆏𑆁 𑆑𑆾 𑆢𑆾 𑆨𑆳𑆓𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆮𑆴𑆨𑆑𑇀𑆠 𑆑𑆫 𑆢𑆴𑆪𑆳 𑆓𑆪𑆳𑇅 𑆥𑇀𑆫𑆡𑆩 – 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳, 𑆠𑆡𑆳 𑆢𑇀𑆮𑆴𑆠𑆵𑆪 – 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑇅 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆯𑆧𑇀𑆢 𑆑𑆳 𑆠𑆳𑆠𑇀𑆥𑆫𑇀𑆪𑆳𑆫𑇀𑆡 𑆪𑆲𑆳𑆁 𑆥𑆫 𑆎𑆱𑆳 𑆱𑆩𑆙𑆤𑆳 𑆖𑆳𑆲𑆴𑆍 𑆑𑆴 – 𑆘𑆾 𑆨𑆵 𑆱𑆳𑆩𑆳𑆘𑆴𑆑 𑆠𑆡𑆳 𑆫𑆳𑆰𑇀𑆛𑇀𑆫𑆵𑆪 𑆱𑆶𑆫𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆑𑆵 𑆱𑆳𑆣𑆤𑆨𑆷𑆠 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆍𑆁 𑆲𑆽𑆁, 𑆠𑆡𑆳 𑆘𑆴𑆤𑆩𑆼𑆁 𑆧𑆿𑆢𑇀𑆣𑆴𑆑 𑆧𑆬 𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆡 𑆲𑆵 𑆱𑆳𑆡 𑆯𑆳𑆫𑆵𑆫𑆴𑆑 𑆧𑆬𑆾𑆁 𑆑𑆳 𑆨𑆵 𑆱𑆳𑆑𑇀𑆰𑆳𑆠𑇀 𑆃𑆤𑆶𑆥𑇀𑆫𑆪𑆾𑆓 𑆱𑆳𑆩𑆫𑆴𑆑 𑆱𑆳𑆩𑆓𑇀𑆫𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆱𑆚𑇀𑆖𑆳𑆬𑆤 𑆑𑆼 𑆤𑆴𑆩𑆴𑆠𑇀𑆠 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆘𑆳𑆠𑆳 𑆡𑆳𑇅 𑆘𑆽𑆱𑆼 𑆑𑆴 𑆣𑆤𑆶𑆫𑇀𑆮𑆼𑆢 𑆄𑆢𑆴𑇅 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆑𑆳𑆬𑆨𑆼𑆢 𑆱𑆼 𑆅𑆱𑆩𑆼𑆁 𑆩𑆲𑆳𑆤𑇀 𑆃𑆤𑇀𑆠𑆫 𑆲𑆾 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆘𑆽𑆱𑆼 𑆑𑆴 𑆄𑆘 𑆑𑆼 𑆥𑆫𑆴𑆥𑇀𑆫𑆼𑆑𑇀𑆰𑇀𑆪 𑆩𑆼𑆁 𑆅𑆱𑆼 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆟𑆶𑆏𑆁 𑆱𑆼 𑆬𑆼𑆑𑆫 𑆱𑆷𑆖𑆤𑆳 𑆍𑆮𑆁 𑆤𑆽𑆫𑆛𑆴𑆮 𑆮𑆳𑆫 𑆎𑆫 𑆦𑆴𑆫 𑆠𑆑𑆤𑆵𑆑𑆵 𑆠𑆁𑆠𑇀𑆫 𑆑𑆼 𑆮𑆳𑆫 𑆠𑆑 𑆑𑆼 𑆫𑆷𑆥 𑆩𑆼𑆁 𑆥𑆫𑆴𑆮𑆫𑇀𑆠𑆴𑆠 𑆲𑆾𑆠𑆳 𑆢𑆼𑆒𑆳 𑆘𑆳 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆎𑆫 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆳 𑆠𑆳𑆠𑇀𑆥𑆫𑇀𑆪 𑆱𑆩𑆱𑇀𑆠 𑆧𑆿𑆢𑇀𑆣𑆴𑆑 𑆱𑆳𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆴𑆑 𑆄𑆣𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑆩𑆴𑆑 𑆣𑆳𑆫𑇀𑆩𑆴𑆑 𑆢𑆳𑆫𑇀𑆯𑆤𑆴𑆑 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆑𑇀𑆰𑆼𑆠𑇀𑆫𑆾𑆁 𑆑𑆼 𑆃𑆤𑆶𑆨𑆮𑆾𑆁 𑆱𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆱𑆷𑆠 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆱𑆩𑆙𑆤𑆳 𑆖𑆳𑆲𑆴𑆍𑇅 𑆘𑆽𑆱𑆼 𑆑𑆴 𑆤𑇀𑆪𑆳𑆪, 𑆮𑇀𑆪𑆳𑆑𑆫𑆟, 𑆃𑆬𑆕𑇀𑆑𑆳𑆫 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴𑇅

𑆪𑆢𑆴 𑆲𑆩 𑆪𑆲 𑆥𑇀𑆫𑆯𑇀𑆤 𑆑𑆫𑆼𑆁 𑆑𑆴 𑆑𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆾𑆆 𑆱𑆩𑆳𑆘 𑆅𑆤𑆩𑆼𑆁 𑆱𑆼 𑆑𑆴𑆱𑆵 𑆍𑆑𑆩𑆳𑆠𑇀𑆫 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆱𑆼 𑆱𑆚𑇀𑆖𑆳𑆬𑆴𑆠 𑆲𑆾 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽 𑆠𑆾 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪 𑆩𑆤𑆵𑆰𑆳 𑆑𑆳 𑆱𑇀𑆥𑆰𑇀𑆛 𑆇𑆠𑇀𑆠𑆫 𑆲𑆾𑆓𑆳 𑆤𑆲𑆵𑆁𑇅 𑆘𑆴𑆱𑆑𑆵 𑆥𑆶𑆰𑇀𑆛𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆩 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆥𑆫𑆯𑆶𑆫𑆳𑆩 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆫𑆳𑆩 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆑𑆸𑆰𑇀𑆟 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆉𑆰𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆠𑆡𑆳 𑆨𑆓𑆮𑆳𑆤𑇀 𑆑𑆼 𑆃𑆮𑆠𑆳𑆫𑆾𑆁 𑆑𑆳 𑆨𑆵 𑆇𑆢𑆳𑆲𑆫𑆟 𑆢𑆼𑆒 𑆱𑆑𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆱𑆩𑆱𑇀𑆠 𑆫𑆳𑆘𑆥𑆶𑆫𑆶𑆰𑆾𑆁 𑆑𑆵 𑆥𑆫𑆩𑇀𑆥𑆫𑆳 𑆠𑆡𑆳 𑆉𑆰𑆴𑆪𑆾𑆁 𑆑𑆵 𑆥𑆫𑆩𑇀𑆥𑆫𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆠𑆡𑆳 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆑𑆵 𑆃𑆮𑆴𑆒𑆟𑇀𑆝𑆴𑆠 𑆱𑆩𑆶𑆥𑆳𑆱𑆤𑆳 𑆑𑆼 𑆄𑆒𑇀𑆪𑆳𑆤𑆾𑆁 𑆱𑆼 𑆱𑆳𑆫𑆼 𑆅𑆠𑆴𑆲𑆳𑆱 𑆥𑆶𑆫𑆳𑆟 𑆄𑆢𑆴 𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡 𑆨𑆫𑆼 𑆥𑆝𑇊𑆼 𑆲𑆽𑆁𑇅 𑆅𑆱𑆵 𑆠𑆡𑇀𑆪 𑆑𑆼 𑆱𑆩𑆫𑇀𑆡𑆤 𑆩𑆼𑆁 𑆃𑆫𑇀𑆡𑆳𑆠𑇀 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆠𑆡𑆳 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆩𑆚𑇀𑆘𑆱𑇀𑆪 𑆑𑆵 𑆖𑆫𑆴𑆠𑆳𑆫𑇀𑆡𑆠𑆳 𑆑𑆼 𑆫𑆷𑆥 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆩 𑆤𑆴𑆩𑇀𑆤𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠 𑆇𑆑𑇀𑆠𑆴 𑆑𑆾 𑆢𑆼𑆒 𑆱𑆑𑆠𑆼 𑆲𑆽𑆁 –

𑆃𑆓𑇀𑆫𑆠𑆂 𑆱𑆑𑆬𑆁 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆁 𑆥𑆸𑆰𑇀𑆜𑆠𑆂 𑆱𑆯𑆫𑆁 𑆣𑆤𑆶𑆂𑇅

𑆃𑆧 𑆪𑆢𑆴 𑆲𑆩 𑆅𑆤 𑆢𑆾𑆤𑆾𑆁 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆏𑆁 (𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆠𑆡𑆳 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆩𑆼𑆁) 𑆠𑆶𑆬𑆤𑆳 𑆢𑇀𑆮𑆳𑆫𑆳 𑆑𑆴𑆱𑆵 𑆍𑆑 𑆑𑆵 𑆯𑇀𑆫𑆼𑆰𑇀𑆜𑆠𑆳 𑆑𑆳 𑆮𑆴𑆖𑆳𑆫 𑆑𑆫𑆼𑆁 𑆠𑆾 𑆪𑆲 𑆪𑆢𑇀𑆪𑆥𑆴 𑆥𑆫𑆩𑆳𑆫𑇀𑆡𑆠𑆂 𑆠𑆾 𑆱𑆩𑇀𑆨𑆮 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆲𑆽𑇅 𑆠𑆡𑆳𑆥𑆴 𑆠𑆫𑇀𑆑 𑆢𑆾𑆤𑆾𑆁 𑆲𑆵 𑆥𑆑𑇀𑆰 𑆑𑆼 𑆱𑆩𑆫𑇀𑆡𑆤 𑆩𑆼𑆁 𑆇𑆥𑆬𑆧𑇀𑆣 𑆲𑆽𑆁𑇅

𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆵 𑆃𑆥𑆼𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆵 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆩𑆲𑆠𑇀𑆠𑆳 –

𑆅𑆱 𑆥𑆑𑇀𑆰 𑆑𑆼 𑆠𑆫𑇀𑆑 𑆑𑆼 𑆃𑆤𑆶𑆱𑆳𑆫 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆵 𑆃𑆥𑆼𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆲𑆵 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆇𑆠𑇀𑆑𑆸𑆰𑇀𑆛 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆖𑆷𑆀𑆑𑆴 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆱𑆼 𑆱𑆶𑆫𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠 𑆫𑆳𑆰𑇀𑆛𑇀𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆵 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆱𑆶𑆫𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠 𑆲𑆾 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅

𑆱𑇀𑆮𑆨𑆳𑆮𑆳𑆠𑇀 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆤𑆵𑆪𑆱𑆵𑇅

𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆼𑆟 𑆫𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠𑆼 𑆫𑆳𑆰𑇀𑆛𑇀𑆫𑆼 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆖𑆴𑆤𑇀𑆠𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆫𑇀𑆠𑇀𑆠𑆠𑆼𑇆

[𑆃𑆤𑆶𑆮𑆳𑆢 – 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆱𑇀𑆮𑆨𑆳𑆮𑆠𑆂 𑆲𑆵 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆱𑆼 𑆗𑆾𑆛𑆵 𑆲𑆽𑇅 (𑆖𑆷𑆀𑆑𑆴) 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆢𑇀𑆮𑆳𑆫𑆳 𑆱𑆁𑆫𑆑𑇀𑆰𑆴𑆠 𑆫𑆳𑆰𑇀𑆛𑇀𑆫 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆵 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆑𑆳 𑆖𑆴𑆤𑇀𑆠𑆤 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆸𑆠𑇀𑆠 𑆲𑆾 𑆱𑆑𑆠𑆳 𑆲𑆽𑇅]

𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆵 𑆃𑆥𑆼𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆵 𑆩𑆲𑆠𑇀𑆠𑆳 –

𑆅𑆱 𑆥𑆑𑇀𑆰 𑆑𑆼 𑆠𑆫𑇀𑆑 𑆑𑆼 𑆃𑆤𑆶𑆱𑆳𑆫 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆑𑆵 𑆃𑆥𑆼𑆑𑇀𑆰𑆳 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆲𑆵 𑆃𑆣𑆴𑆑 𑆇𑆠𑇀𑆑𑆸𑆰𑇀𑆛 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆲𑆽𑇅 𑆖𑆷𑆀𑆑𑆴 𑆯𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆠𑆾 𑆘𑆧 𑆱𑆳𑆩𑆫𑇀𑆡𑇀𑆪 𑆃𑆥𑆤𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆿𑆞𑆴 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆾𑆠𑆳 𑆲𑆽 𑆇𑆱 𑆪𑆶𑆮𑆳𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆲𑆵 𑆯𑆾𑆨𑆳 𑆢𑆼𑆠𑆵 𑆲𑆽𑇅 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆮𑆸𑆢𑇀𑆣𑆳𑆮𑆱𑇀𑆡𑆳 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆫𑆵𑆫 𑆑𑆼 𑆯𑆴𑆡𑆴𑆬 𑆲𑆾𑆤𑆼 𑆥𑆫 𑆇𑆥𑆲𑆳𑆱 𑆑𑆳 𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆧𑆤 𑆘𑆳𑆠𑆵 𑆲𑆽𑇅 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆯𑆳𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳 𑆠𑆾 𑆃𑆣𑆴𑆓𑆠 𑆲𑆾𑆤𑆼 𑆥𑆫 𑆇𑆠𑇀𑆠𑆫𑆾𑆠𑇀𑆠𑆫 𑆱𑆩𑆸𑆢𑇀𑆣 𑆲𑆾𑆠𑆵 𑆲𑆶𑆆 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆢𑆳 𑆲𑆵 𑆄𑆢𑆫 𑆑𑆳 𑆑𑆳𑆫𑆟 𑆧𑆤𑆠𑆵 𑆲𑆽𑇅

...contd.

विद्या शस्त्रञ्च शास्त्रञ्च द्वे विद्ये प्रतिपत्तये ।

आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाऽद्रियते सदा ॥

[अनुवाद – अध्ययन/बोध के लिए दो ही विद्याएं हैं – १. शस्त्रविद्या, एवं २. शास्त्रविद्या। प्रथम (शस्त्रविद्या) तो बुढ़ापे में उपहास का कारण बन जाती है, किन्तु दूसरी (शास्त्रविद्या) तो सर्वदा ही समादर पाती है।]

निष्कर्ष –

शास्त्र से अनुप्राणित शस्त्र की ही समुचित दिशा में प्रवृत्ति हो सकती है। तथा शस्त्र से संरक्षित राष्ट्र में ही शास्त्र के गूढ़ विषयों का चिन्तन सम्भव है। किन्तु शस्त्र द्वारा राष्ट्र के संरक्षित हो जाने पर भी यदि कोई राष्ट्र शास्त्र से हीन हो तो वह सुरक्षा स्थायी नहीं हो सकती। और शारीरिक स्वतन्त्रता तो यथाकथञ्चित शस्त्र द्वारा प्राप्त की भी जा सकती है किन्तु बौद्धिक स्वतन्त्रता, सांस्कृतिक स्वतन्त्रता, निष्ठा की स्वतन्त्रता, मौलिक विचार तथा चिन्तन स्वतन्त्रता इत्यादि तो केवल शास्त्र के चिन्तन और समुपासना से ही सम्भव हैं। यदि शस्त्र द्वारा राष्ट्र भौतिक तथा शारीरिक रूप से संरक्षित न हो तो शास्त्रचिन्तन सम्यक् प्रवृत्त नहीं हो सकता। अतः शस्त्रविद्या तथा शास्त्रविद्या के सामञ्जस्य का जो निदर्शन भारतीय राजपरम्परा तथा ऋषिपरम्परा ने प्रस्तुत किया, तथा पूर्व में इसका जो आदर्श प्रतिष्ठापित किया वही एक सभ्य, सुसंस्कृत, विकसित तथा प्रौढ़ समाज के चिरकालीन स्वस्थ सञ्चालन का सर्वोत्तम मार्ग है। इस सामञ्जस्य के विघटन का प्रभाव सामाजिक विघटन के रूप में कैसे त्वरित् प्रतिफलित होता है इसके उदाहरण हेतु भारतीय इतिहास का परतन्त्रता का कालखण्ड देखा जा सकता है।

विद्या शस्त्रञ्च शास्त्रञ्च द्वे विद्ये प्रतिपत्तये ।

आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाऽद्रियते सदा ॥

[अनुवाद – अध्ययन/बोध के लिए दो ही विद्याएं हैं – १. शस्त्रविद्या, एवं २. शास्त्रविद्या। प्रथम (शस्त्रविद्या) तो बुढ़ापे में उपहास का कारण बन जाती है, किन्तु दूसरी (शास्त्रविद्या) तो सर्वदा ही समादर पाती है।]

निष्कर्ष –

शास्त्र से अनुप्राणित शस्त्र की ही समुचित दिशा में प्रवृत्ति हो सकती है। तथा शस्त्र से संरक्षित राष्ट्र में ही शास्त्र के गूढ़ विषयों का चिन्तन सम्भव है। किन्तु शस्त्र द्वारा राष्ट्र के संरक्षित हो जाने पर भी यदि कोई राष्ट्र शास्त्र से हीन हो तो वह सुरक्षा स्थायी नहीं हो सकती। और शारीरिक स्वतन्त्रता तो यथाकथञ्चित शस्त्र द्वारा प्राप्त की भी जा सकती है किन्तु बौद्धिक स्वतन्त्रता, सांस्कृतिक स्वतन्त्रता, निष्ठा की स्वतन्त्रता, मौलिक विचार तथा चिन्तन स्वतन्त्रता इत्यादि तो केवल शास्त्र के चिन्तन और समुपासना से ही सम्भव हैं। यदि शस्त्र द्वारा राष्ट्र भौतिक तथा शारीरिक रूप से संरक्षित न हो तो शास्त्रचिन्तन सम्यक् प्रवृत्त नहीं हो सकता। अतः शस्त्रविद्या तथा शास्त्रविद्या के सामञ्जस्य का जो निदर्शन भारतीय राजपरम्परा तथा ऋषिपरम्परा ने प्रस्तुत किया, तथा पूर्व में इसका जो आदर्श प्रतिष्ठापित किया वही एक सभ्य, सुसंस्कृत, विकसित तथा प्रौढ़ समाज के चिरकालीन स्वस्थ सञ्चालन का सर्वोत्तम मार्ग है। इस सामञ्जस्य के विघटन का प्रभाव सामाजिक विघटन के रूप में कैसे त्वरित् प्रतिफलित होता है इसके उदाहरण हेतु भारतीय इतिहास का परतन्त्रता का कालखण्ड देखा जा सकता है।

By Rakesh Kaul

# Brief overview of the History of Sharada Script

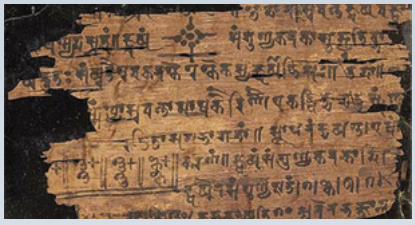

Sharada Lipi traces back to 3rd CE, as per the new evidence that has surfaced up lately. New carbon dating research commissioned by the University of Oxford's Bodleian Libraries into the ancient Indian Bakhshali manuscript, provides evidence that this manuscript can be dated to 3rd CE. Determining the date of the Bakhshali manuscript is of vital importance to the history of mathematics and study of early South Asian culture testifying to the subcontinent's rich and longstanding scientific tradition.

The Bakhshali manuscript uses an early stage of the Sharada script, and therefore, provides earliest record of this script. Thus, Sharada has existed much before Devanagari, but Devanagari has never been replacement for Sharada. Sharada is mother script to Gurumukhi, Landa and Takri scripts. The use of this script was at its prime between 8th and 12th century CE in Kashmir and neighbouring areas. This also happens to be the era when Kashmir was rich culturally and spiritually and was the hub of knowledge. This is the time when Sharada Peeth in Kashmir was a well recognized as a seat of learning and was famous all over India and in the neighbouring countries. Large number of books and scriptures were written in Sharada Script during this time. No wonder, there are an estimated 40,000 manuscripts written in Sharada script, which can be found in various libraries in India, United States, Canada and many European countries. Many must have got destroyed and some may be lying with some householders. These manuscripts are believed to be rich source of knowledge about mathematics, astrology, medicine and philosophy.

With the invasion of Muslim rulers and their establishment in India and particularly in Kashmir, Hindu literature including Sharada script faced a serious on slaughter. The script was forced out of usage and became almost extinct. The general population remained deprived of the knowledge of the script as well as the grand manuscripts that were written in this script. Only a minuscule of Hindu community who continued to use Sharada for writing horoscopes remained knowledgeable about this script.

क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना। अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
वनहोस अन्तरयामी छुखना, अनुग्रह छु गॉण चोन दर्शुन दिखना।
वालिहे भूमिकायि भार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥१॥

सृष्टी छि वुन्यक्यन भयभीत गामुच़, आकाश पृथ्वी सखती आमुच़।
मॅकुलावि नरकुन नार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥२॥

सासु बंद्य रावन श्यनुवंन्य् तरफन, परमानो शस्त्रवुय अलरावन।
ज़गतस रक्षाकार यीना,अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥३॥

त्रेयिम न्यथुर वुनि मतु मुच़रावतन, नरसिंह अवतार पाप मॅकलावतन।
भक्तुयन बखशनहार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥४॥

इष्ट छुम ज़गतस कष्ट कासवोनुय, थदि दरबारय स्योद वुछवोनुय।
मदलोचन मूक्षिद्वार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥५॥

धर्मुक व्यवहार कर्मुक व्यसतार, भावुक मिलच़ार त्यागुक ताजदार।
सन्तन हुन्द शेहजार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥६॥

मुरली मनोहर अनुग्रह पूर कर, गोपाल गिर्धर संकट दूर कर।
राधायि हुन्द मॅख्तुहार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥७॥

जॅसुदायि नन्दलाल खॅनि ललनोवुन, बालु गूपाल रॅनि मंज़ुलिस थोवुन।
गूपियन हुन्द लोलु नार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥८॥

गीता ज्ञान गव अनुभव सपदुन, श्वदमन कॉरिथुय च़्यथ रव गछि नुन।
बीद रोस अबीद आकार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥९॥

जुव जान वन्दुहस पम्पोश पादन, कर वाति «कोफरस» थावि लादन।
हाविहेस साधुनायि सार यीना, अन्तु रंस्यतिस सोनुय आर यीना॥
क्याह दुबारु कृष्ण अवतार यीना॥१०॥

By :-Kumud Hegde

# भारतीय प्राचीन लिपयः/ 𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪𑆥𑇀𑆫𑆳𑆖𑆵𑆤𑆬𑆴𑆥𑆪𑆂

भारतीयप्राचीनलिपयः इति शीर्षिकायाः वस्तुविषयः विशालः।

अस्य विमर्शणात् प्राक् लिपिर्नाम का ?

भाषायाः लिपेश्च सम्बन्धः वर्तते वा? वर्तते इति चेत्कथम् ?

किं वेदकालात् लिपिरासीदुत लिपिराधुनिकाविष्कारेष्वन्यतमा ?

इति बहवः प्रश्नाः समुद्भवन्ति।

अत्र संक्षिप्तरूपेण नाम पीठिका रूपेण समाधाय विषयः प्रस्तूयते।

लिपिर्नाम कामपि भाषां प्रतिनिदधतां, लिपित्वेन जनतासम्मतानां च वर्णविन्यासचिह्नानां श्रेणिः।

सामान्यतया लिपिर्नाम अक्षराणामर्थपूर्णविन्यासः।

तत्र अक्षराणि अथवा वर्णाः भवेयुः।

तेषां व्यवस्थितविन्यासः भवेत्।

तस्य निर्दिष्टार्थोऽपि भवेत्।

एवं गुणविशिष्टवर्णविन्यासचिह्नानां श्रेणिः जनतासम्मता स्यात्।

सैव लिपित्वेन मन्यते।

इत्थञ्च ध्वनेः चाक्षुषरूपः लिपिरित्यर्थः फलति।

भाषा नाम देशविशेषस्य जनानां मौखिकरूपेण सम्प्रेषणप्रणाली।

संवहनमाध्यममिति यावत्।

मानवजातिद्वारा स्वविचाराणां, कल्पनानां, मनोभावस्य च व्यक्तीकरणाय प्रयुक्ता ध्वनिरेव भाषात्वेनाभिधीयते।

लिपेः भाषायाश्च अर्थावगमनोत्तरं तयोः सम्बन्धः दृष्टव्यः।

भाषा एवं लिपेश्च अविनाभावरूपः सम्बन्धः नास्तीत्यादौ ज्ञातव्यम्।

कथमेतदिति चेत्, एकयैव लिप्या बह्वीः भाषाः लिखितुं वयं प्रभवामः।

यथा, रोमन् लिपिः प्रायः सर्वासां युरोपीयभाषाणां लेखने प्रयुज्यते।

एवमेकां भाषां लिखितुं बह्वीः लिपीः उपयुज्यते।

यथा, संस्कृतभाषायाः लेखने देवनागरी शारदा ग्रन्थ नन्दिनागरी मलयाल तिगलारी मैथिली नेवारीत्यादि बह्वीः लिपीः उपयुज्यते।

इत्थञ्च लिपिः भाषायाः पृथग्तिष्ठति।

अत एव संस्कृतभाषा कालानुगुणं, देशानुगुणं विभिन्नासु लिपिषु लिखिता उपलभ्यते।

तर्हि लिपिः' इत्यस्य प्रयोगः कदारभ्य जातः?

इति सन्देहो उत्पद्यते।

किं वेदकालेऽपि लिपिरासीद्वा इति।

वेदकालः श्रुतिप्रधानः।

तत्र श्रवणेनैव ज्ञानप्रसारोऽभूदिति श्रूयते।

परन्तु प्राचीनकाले लिपिरासीदित्यत्र कतिचनप्रमाणान्युपलभ्यन्ते।

𑆨𑆳𑆫𑆠𑆵𑆪𑆥𑇀𑆫𑆳𑆖𑆵𑆤𑆬𑆴𑆥𑆪𑆂 𑆅𑆠𑆴 𑆯𑆵𑆫𑇀𑆰𑆴𑆑𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆮𑆱𑇀𑆠𑆶𑆮𑆴𑆰𑆪𑆂 𑆮𑆴𑆯𑆳𑆬𑆂𑇅

𑆃𑆱𑇀𑆪 𑆮𑆴𑆩𑆫𑇀𑆯𑆟𑆳𑆠𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆑𑇀 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑇀𑆤𑆳𑆩 𑆑𑆳?

𑆨𑆳𑆰𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆬𑆴𑆥𑆼𑆯𑇀𑆖 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆂 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆠𑆼 𑆮𑆳? 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆠𑆼 𑆅𑆠𑆴 𑆖𑆼𑆠𑇀𑆑𑆡𑆩𑇀?

𑆑𑆴𑆁 𑆮𑆼𑆢𑆑𑆳𑆬𑆳𑆠𑇀 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆳𑆱𑆵𑆢𑆶𑆠 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆳𑆣𑆶𑆤𑆴𑆑𑆳𑆮𑆴𑆰𑇀𑆑𑆳𑆫𑆼𑆰𑇀𑆮𑆤𑇀𑆪𑆠𑆩𑆳?

𑆅𑆠𑆴 𑆧𑆲𑆮𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆯𑇀𑆤𑆳𑆂 𑆱𑆩𑆶𑆢𑇀𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆴𑇅

𑆃𑆠𑇀𑆫 𑆱𑆁𑆑𑇀𑆰𑆴𑆥𑇀𑆠𑆫𑆷𑆥𑆼𑆟 𑆤𑆳𑆩 𑆥𑆵𑆜𑆴𑆑𑆳 𑆫𑆷𑆥𑆼𑆟 𑆱𑆩𑆳𑆣𑆳𑆪 𑆮𑆴𑆰𑆪𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆱𑇀𑆠𑆷𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑇀𑆤𑆳𑆩 𑆑𑆳𑆩𑆥𑆴 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆤𑆴𑆢𑆣𑆠𑆳𑆁, 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆠𑇀𑆮𑆼𑆤 𑆘𑆤𑆠𑆳𑆱𑆩𑇀𑆩𑆠𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆖 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆮𑆴𑆤𑇀𑆪𑆳𑆱𑆖𑆴𑆲𑇀𑆤𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆯𑇀𑆫𑆼𑆟𑆴𑆂𑇅

𑆱𑆳𑆩𑆳𑆤𑇀𑆪𑆠𑆪𑆳 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑇀𑆤𑆳𑆩 𑆃𑆑𑇀𑆰𑆫𑆳𑆟𑆳𑆩𑆫𑇀𑆡𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟𑆮𑆴𑆤𑇀𑆪𑆳𑆱𑆂𑇅 𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆃𑆑𑇀𑆰𑆫𑆳𑆟𑆴 𑆃𑆡𑆮𑆳 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆳𑆂 𑆨𑆮𑆼𑆪𑆶𑆂𑇅

𑆠𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆮𑇀𑆪𑆮𑆱𑇀𑆡𑆴𑆠𑆮𑆴𑆤𑇀𑆪𑆳𑆱𑆂 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀𑇅

𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆢𑆴𑆰𑇀𑆛𑆳𑆫𑇀𑆡𑆾𑇁𑆥𑆴 𑆨𑆮𑆼𑆠𑇀𑇅

𑆍𑆮𑆁 𑆓𑆶𑆟𑆮𑆴𑆯𑆴𑆰𑇀𑆛𑆮𑆫𑇀𑆟𑆮𑆴𑆤𑇀𑆪𑆳𑆱𑆖𑆴𑆲𑇀𑆤𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆯𑇀𑆫𑆼𑆟𑆴𑆂 𑆘𑆤𑆠𑆳𑆱𑆩𑇀𑆩𑆠𑆳 𑆱𑇀𑆪𑆳𑆠𑇀𑇅

𑆱𑆽𑆮 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆠𑇀𑆮𑆼𑆤 𑆩𑆤𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆅𑆠𑇀𑆡𑆚𑇀𑆖 𑆣𑇀𑆮𑆤𑆼𑆂 𑆖𑆳𑆑𑇀𑆰𑆶𑆰𑆫𑆷𑆥𑆂 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆴𑆠𑇀𑆪𑆫𑇀𑆡𑆂 𑆦𑆬𑆠𑆴𑇅

𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆤𑆳𑆩 𑆢𑆼𑆯𑆮𑆴𑆯𑆼𑆰𑆱𑇀𑆪 𑆘𑆤𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆩𑆿𑆒𑆴𑆑𑆫𑆷𑆥𑆼𑆟 𑆱𑆩𑇀𑆥𑇀𑆫𑆼𑆰𑆟𑆥𑇀𑆫𑆟𑆳𑆬𑆵𑇅

𑆱𑆁𑆮𑆲𑆤𑆩𑆳𑆣𑇀𑆪𑆩𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆪𑆳𑆮𑆠𑇀𑇅

𑆩𑆳𑆤𑆮𑆘𑆳𑆠𑆴𑆢𑇀𑆮𑆳𑆫𑆳 𑆱𑇀𑆮𑆮𑆴𑆖𑆳𑆫𑆳𑆟𑆳𑆁, 𑆑𑆬𑇀𑆥𑆤𑆳𑆤𑆳𑆁, 𑆩𑆤𑆾𑆨𑆳𑆮𑆱𑇀𑆪 𑆖 𑆮𑇀𑆪𑆑𑇀𑆠𑆵𑆑𑆫𑆟𑆳𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆶𑆑𑇀𑆠𑆳 𑆣𑇀𑆮𑆤𑆴𑆫𑆼𑆮 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆠𑇀𑆮𑆼𑆤𑆳𑆨𑆴𑆣𑆵𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆬𑆴𑆥𑆼𑆂 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆪𑆳𑆯𑇀𑆖 𑆃𑆫𑇀𑆡𑆳𑆮𑆓𑆩𑆤𑆾𑆠𑇀𑆠𑆫𑆁 𑆠𑆪𑆾𑆂 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆂 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆮𑇀𑆪𑆂𑇅

𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆍𑆮𑆁 𑆬𑆴𑆥𑆼𑆯𑇀𑆖 𑆃𑆮𑆴𑆤𑆳𑆨𑆳𑆮𑆫𑆷𑆥𑆂 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆂 𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑆵𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆿 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆠𑆮𑇀𑆪𑆩𑇀𑇅

𑆑𑆡𑆩𑆼𑆠𑆢𑆴𑆠𑆴 𑆖𑆼𑆠𑇀, 𑆍𑆑𑆪𑆽𑆮 𑆬𑆴𑆥𑇀𑆪𑆳 𑆧𑆲𑇀𑆮𑆵𑆂 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆂 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆶𑆁 𑆮𑆪𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆨𑆮𑆳𑆩𑆂𑇅

𑆪𑆡𑆳, 𑆫𑆾𑆩𑆤𑇀 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪𑆂 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆳𑆱𑆳𑆁 𑆪𑆶𑆫𑆾𑆥𑆵𑆪𑆨𑆳𑆰𑆳𑆟𑆳𑆁 𑆬𑆼𑆒𑆤𑆼 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆶𑆘𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆍𑆮𑆩𑆼𑆑𑆳𑆁 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆶𑆁 𑆧𑆲𑇀𑆮𑆵𑆂 𑆬𑆴𑆥𑆵𑆂 𑆇𑆥𑆪𑆶𑆘𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆪𑆡𑆳, 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆨𑆳𑆰𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆬𑆼𑆒𑆤𑆼 𑆢𑆼𑆮𑆤𑆳𑆓𑆫𑆵 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆳 𑆓𑇀𑆫𑆤𑇀𑆡 𑆤𑆤𑇀𑆢𑆴𑆤𑆳𑆓𑆫𑆵 𑆩𑆬𑆪𑆳𑆬 𑆠𑆴𑆓𑆬𑆳𑆫𑆵 𑆩𑆽𑆡𑆴𑆬𑆵 𑆤𑆼𑆮𑆳𑆫𑆵𑆠𑇀𑆪𑆳𑆢𑆴 𑆧𑆲𑇀𑆮𑆵𑆂 𑆬𑆴𑆥𑆵𑆂 𑆇𑆥𑆪𑆶𑆘𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆅𑆠𑇀𑆡𑆚𑇀𑆖 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂 𑆨𑆳𑆰𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆥𑆸𑆡𑆓𑇀𑆠𑆴𑆰𑇀𑆜𑆠𑆴𑇅

𑆃𑆠 𑆍𑆮 𑆱𑆁𑆱𑇀𑆑𑆸𑆠𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆑𑆳𑆬𑆳𑆤𑆶𑆓𑆶𑆟𑆁, 𑆢𑆼𑆯𑆳𑆤𑆶𑆓𑆶𑆟𑆁 𑆮𑆴𑆨𑆴𑆤𑇀𑆤𑆳𑆱𑆶 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆰𑆶 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆳 𑆇𑆥𑆬𑆨𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆠𑆫𑇀𑆲𑆴 '𑆬𑆴𑆥𑆴𑆂' 𑆅𑆠𑇀𑆪𑆱𑇀𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆾𑆓𑆂 𑆑𑆢𑆳𑆫𑆨𑇀𑆪 𑆘𑆳𑆠𑆂?

𑆅𑆠𑆴 𑆱𑆤𑇀𑆢𑆼𑆲𑆾 𑆇𑆠𑇀𑆥𑆢𑇀𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆑𑆴𑆁 𑆮𑆼𑆢𑆑𑆳𑆬𑆼𑇁𑆥𑆴 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆳𑆱𑆵𑆢𑇀𑆮𑆳 𑆅𑆠𑆴𑇅

𑆮𑆼𑆢𑆑𑆳𑆬𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑆴𑆥𑇀𑆫𑆣𑆳𑆤𑆂𑇅

𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆯𑇀𑆫𑆮𑆟𑆼𑆤𑆽𑆮 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆥𑇀𑆫𑆱𑆳𑆫𑆾𑇁𑆨𑆷𑆢𑆴𑆠𑆴 𑆯𑇀𑆫𑆷𑆪𑆠𑆼𑇅

𑆥𑆫𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆖𑆵𑆤𑆑𑆳𑆬𑆼 𑆬𑆴𑆥𑆴𑆫𑆳𑆱𑆵𑆢𑆴𑆠𑇀𑆪𑆠𑇀𑆫 𑆑𑆠𑆴𑆖𑆤𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆟𑆳𑆤𑇀𑆪𑆶𑆥𑆬𑆨𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆼𑇅

By :-CST

# पांद्रेठन में शिवजी का मन्दिर / ਪਾਂਦ੍ਰੇਠਨ ਮੇਂ ਸ਼ਿਵਜੀ ਕਾ ਮਨ੍ਦਿਰ

पांद्रेठन श्रीनगर के दक्षिण पूर्व में स्थित है। इस जगह का यह नाम श्रीनगर राजधानी बनने के उपरांत "पुराणाधिशठान" से पडा, जिस का मतलब पुरानी राजधानी है। यह मोरिया राजा अशोक ने बनाया माना जाता है। पांद्रेठन का उल्लेख कलहन की राजतरंगिनी में किया गया है। राजा अशोक के पुत्र जलुका ने शिवजी की मूर्ति की स्थापना की थी। पैंद्रेठन में शिव भक्ती को प्राथमिकता दी गयी। इस शहर को मानव की क्रूर बर्बरता सहन करनी पडी। सुलतान सिकंदर ( जिसे भुतशिकन का नाम दिया गया था) ने सभी मन्दिरों को तुड़वाया या नष्ट करवाया। मूर्तियों को उखाड़ कर फेंक दिया गया। सुल्तान की तरफ से यह कार्य उस के मंत्री सुहभट्ट ने किया था। जोनराज बताते हैं कि ऐसा कोई शहर नही था जहां मन्दिर नही तोडे गये। विजेश, चक्रधर,मार्तंड, ब्रहत बुद्दा , सुरेश्वरीओर वरहा का खास वर्नन है। स्वर्ण व चाँदी की प्रतिमाओं को पिगला कर मुद्रा बनाने के काम में लाया गया। सुलतान सिकंदर ने सभी मूर्तियों को नष्ट करवाया। जो भी कुछ बचा वह इस लिये कि वह बहुत नीचे दबा हुआ था। एक मन्दिर को छोड़कर सभी को नष्ट करवाया गया था। जी टी विगने जो १९ वी शताब्दी के पहले भाग में पांद्रेठन आये थे, लिखा है कि उन्होंने बहुत बडे शिव लिंग व मूर्तियों के टुकड़े वहां देखे थे। उन का मानना था कि यहाँ एक बडा नगर व मन्दिरों का बहुत ही बड़ा परिसर होता होगा। उन्होंने उन टुकड़ों के चित्र भी बनाये थे। यह मन्दिर परिसर लगभग ५ वर्ग कि० मी० में बसा था।

अब इस जगह केवल एक मन्दिर है, जिस के अन्दर शिवलिंग रखा गया है। कन्निघम व कोल का कहना है कि यह मन्दिर मेरूवरधन ने बनवाया था। इस मन्दिर की बनावट से पता चलता है कि यह एक शिव मन्दिर ही था जिसमें या तो शिवलिंग या शिवजी की चौमुखी प्रतिमा थी। यह मन्दिर १०वीं शताब्दी से पहले का है। यह मन्दिर छोटे आकार का होने व पानी में डुबे रहने के कारण बच गया। इस मन्दिर की बनावट व समरूपता देखने योग्य व सराहनीय है। अब यह मन्दिर एक तालाब के बीच है ।अब यह मन्दिर एक तालाब के बीच है। इस तालाब को पास के चश्मे बरा रखते हैं जिसमें दिव्य मछलियों को देखा जा सकता है ।यह अशलर पत्थर का बना है।

यह जानकारी ए एस आई की पुस्तक से ली गयी है।

ਪਾਂਦ੍ਰੇਠਨ ਸ਼੍ਰੀਨਗਰ ਕੇ ਦਕ੍ਸ਼ਿਣ ਪੂਰ੍ਵ ਮੇਂ ਸ੍ਥਿਤ ਹੈ। ਇਸ ਜਗਹ ਕਾ ਯਹ ਨਾਮ ਸ਼੍ਰੀਨਗਰ ਰਾਜਧਾਨੀ ਬਨਨੇ ਕੇ ਉਪਰਾਂਤ "ਪੁਰਾਣਾਧਿਸ਼ਠਾਨ" ਸੇ ਪਡਾ, ਜਿਸ ਕਾ ਮਤਲਬ ਪੁਰਾਨੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਹੈ। ਯਹ ਮੋਰਿਯਾ ਰਾਜਾ ਅਸ਼ੋਕ ਨੇ ਬਨਾਯਾ ਮਾਨਾ ਜਾਤਾ ਹੈ। ਪਾਂਦ੍ਰੇਠਨ ਕਾ ਉਲ੍ਲੇਖ ਕਲਹਨ ਕੀ ਰਾਜਤਰਂਗਿਨੀ ਮੇਂ ਕਿਯਾ ਗਯਾ ਹੈ। ਰਾਜਾ ਅਸ਼ੋਕ ਕੇ ਪੁਤ੍ਰ ਜਲੁਕਾ ਨੇ ਸ਼ਿਵਜੀ ਕੀ ਮੂਰ੍ਤਿ ਕੀ ਸ੍ਥਾਪਨਾ ਕੀ ਥੀ। ਪੈਂਦ੍ਰੇਠਨ ਮੇਂ ਸ਼ਿਵ ਭਕ੍ਤੀ ਕੋ ਪ੍ਰਾਥਮਿਕਤਾ ਦੀ ਗਯੀ। ਇਸ ਸ਼ਹਰ ਕੋ ਮਾਨਵ ਕੀ ਕ੍ਰੂਰ ਬਰ੍ਬਰਤਾ ਸਹਨ ਕਰਨੀ ਪਡੀ। ਸੁਲਤਾਨ ਸਿਕਂਦਰ ( ਜਿਸੇ ਭੁਤਸ਼ਿਕਨ ਕਾ ਨਾਮ ਦਿਯਾ ਗਯਾ ਥਾ) ਨੇ ਸਭੀ ਮਨ੍ਦਿਰੋਂ ਕੋ ਤੁੜਵਾਯਾ ਯਾ ਨਸ਼੍ਟ ਕਰਵਾਯਾ। ਮੂਰ੍ਤਿਯੋਂ ਕੋ ਉਖਾੜ ਕਰ ਫੇਂਕ ਦਿਯਾ ਗਯਾ। ਸੁਲ੍ਤਾਨ ਕੀ ਤਰਫ਼ ਸੇ ਯਹ ਕਾਰ੍ਯ ਉਸ ਕੇ ਮਂਤ੍ਰੀ ਸੁਹਭਟ੍ਟ ਨੇ ਕਿਯਾ ਥਾ। ਜੋਨਰਾਜ ਬਤਾਤੇ ਹੈਂ ਕਿ ਐਸਾ ਕੋਈ ਸ਼ਹਰ ਨਹੀ ਥਾ ਜਹਾਂ ਮਨ੍ਦਿਰ ਨਹੀ ਤੋਡੇ ਗਯੇ। ਵਿਜੇਸ਼, ਚਕ੍ਰਧਰ,ਮਾਰ੍ਤਂਡ, ਬ੍ਰਹਤ ਬੁਦ੍ਦਾ , ਸੁਰੇਸ਼੍ਵਰੀਓਰ ਵਰਹਾ ਕਾ ਖਾਸ ਵਰ੍ਨਨ ਹੈ। ਸ੍ਵਰ੍ਣ ਵ ਚਾਂਦੀ ਕੀ ਪ੍ਰਤਿਮਾਓਂ ਕੋ ਪਿਗਲਾ ਕਰ ਮੁਦ੍ਰਾ ਬਨਾਨੇ ਕੇ ਕਾਮ ਮੇਂ ਲਾਯਾ ਗਯਾ। ਸੁਲਤਾਨ ਸਿਕਂਦਰ ਨੇ ਸਭੀ ਮੂਰ੍ਤਿਯੋਂ ਕੋ ਨਸ਼੍ਟ ਕਰਵਾਯਾ। ਜੋ ਭੀ ਕੁਛ ਬਚਾ ਵਹ ਇਸ ਲਿਯੇ ਕਿ ਵਹ ਬਹੁਤ ਨੀਚੇ ਦਬਾ ਹੁਆ ਥਾ। ਏਕ ਮਨ੍ਦਿਰ ਕੋ ਛੋਡ਼ਕਰ ਸਭੀ ਕੋ ਨਸ਼੍ਟ ਕਰਵਾਯਾ ਗਯਾ ਥਾ। ਜੀ ਟੀ ਵਿਗਨੇ ਜੋ ੧੯ ਵੀ ਸ਼ਤਾਬ੍ਦੀ ਕੇ ਪਹਲੇ ਭਾਗ ਮੇਂ ਪਾਂਦ੍ਰੇਠਨ ਆਯੇ ਥੇ, ਲਿਖਾ ਹੈ ਕਿ ਉਨ੍ਹੋਂਨੇ ਬਹੁਤ ਬਡੇ ਸ਼ਿਵ ਲਿਂਗ ਵ ਮੂਰ੍ਤਿਯੋਂ ਕੇ ਟੁਕਡ਼ੇ ਵਹਾਂ ਦੇਖੇ ਥੇ। ਉਨ ਕਾ ਮਾਨਨਾ ਥਾ ਕਿ ਯਹਾਁ ਏਕ ਬਡਾ ਨਗਰ ਵ ਮਨ੍ਦਿਰੋਂ ਕਾ ਬਹੁਤ ਹੀ ਬਡ਼ਾ ਪਰਿਸਰ ਹੋਤਾ ਹੋਗਾ। ਉਨ੍ਹੋਂਨੇ ਉਨ ਟੁਕਡ਼ੋਂ ਕੇ ਚਿਤ੍ਰ ਭੀ ਬਨਾਯੇ ਥੇ। ਯਹ ਮਨ੍ਦਿਰ ਪਰਿਸਰ ਲਗਭਗ ੫ ਵਰ੍ਗ ਕਿ॰ ਮੀ॰ ਮੇਂ ਬਸਾ ਥਾ।

ਅਬ ਇਸ ਜਗਹ ਕੇਵਲ ਏਕ ਮਨ੍ਦਿਰ ਹੈ, ਜਿਸ ਕੇ ਅਨ੍ਦਰ ਸ਼ਿਵਲਿਂਗ ਰਾਖਾ ਗਯਾ ਹੈ। ਕਨ੍ਨਿਘਮ ਵ ਕੋਲ ਕਾ ਕਹਨਾ ਹੈ ਕਿ ਯਹ ਮਨ੍ਦਿਰ ਮੇਰੂਵਰਧਨ ਨੇ ਬਨਵਾਯਾ ਥਾ। ਇਸ ਮਨ੍ਦਿਰ ਕੀ ਬਨਾਵਟ ਸੇ ਪਤਾ ਚਲਤਾ ਹੈ ਕਿ ਯਹ ਏਕ ਸ਼ਿਵ ਮਨ੍ਦਿਰ ਹੀ ਥਾ ਜਿਸਮੇਂ ਯਾ ਤੋ ਸ਼ਿਵਲਿਂਗ ਯਾ ਸ਼ਿਵਜੀ ਕੀ ਚੌਮੁਖੀ ਪ੍ਰਤਿਮਾ ਥੀ। ਯਹ ਮਨ੍ਦਿਰ ੧੦ਵੀਂ ਸ਼ਤਾਬ੍ਦੀ ਸੇ ਪਹਲੇ ਕਾ ਹੈ। ਯਹ ਮਨ੍ਦਿਰ ਛੋਟੇ ਆਕਾਰ ਕਾ ਹੋਨੇ ਵ ਪਾਨੀ ਮੇਂ ਡੁਬੇ ਰਹਨੇ ਕੇ ਕਾਰਣ ਬਚ ਗਯਾ। ਇਸ ਮਨ੍ਦਿਰ ਕੀ ਬਨਾਵਟ ਵ ਸਮਰੂਪਤਾ ਦੇਖਨੇ ਯੋਗ੍ਯ ਵ ਸਰਾਹਨੀਯ ਹੈ। ਅਬ ਯਹ ਮਨ੍ਦਿਰ ਏਕ ਤਾਲਾਬ ਕੇ ਬੀਚ ਹੈ ।ਅਬ ਯਹ ਮਨ੍ਦਿਰ ਏਕ ਤਾਲਾਬ ਕੇ ਬੀਚ ਹੈ। ਇਸ ਤਾਲਾਬ ਕੋ ਪਾਸ ਕੇ ਚਸ਼੍ਮੇ ਬਰਾ ਰਖਤੇ ਹੈਂ ਜਿਸਮੇਂ ਦਿਵ੍ਯ ਮਛਲਿਯੋਂ ਕੋ ਦੇਖਾ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ ।ਯਹ ਅਸ਼ਲਰ ਪਤ੍ਥਰ ਕਾ ਬਨਾ ਹੈ।

ਯਹ ਜਾਨਕਾਰੀ ਏ ਏਸ ਆਈ ਕੀ ਪੁਸ੍ਤਕ ਸੇ ਲੀ ਗਯੀ ਹੈ।

*Picture courtsey :- Mr.Sunil R. Rajanaka*

By :-Radha Raghunathan

# Ksemarāja's Pratyabhijñāhṛdayam

## Introduction (Translated and Explained)– (Continued)

Rājanaka Kṣemarāja (late 10th to early 11th centuries) was one among the foremost who propounded the Pratyabhijñā philosophy of Kashmir Śaivism. Not much is known about his parentage and family. What is well-known is that, he was the famous disciple of a famous guru Abhinavagupta. The guru was a polymath, that is an authority on Tāntrism, Śaivism, yoga, alchemy (rasāyana) and esoteric rituals. Abhinavagupta synthesized all these together as Trika-Kaula. The brilliant student that he was, Kṣemarāja absorbed the guru's Trika-Kaula teachings and applied the same systematically in his long commentaries on the fundamental texts of Kashmir Śaivism. Notable among such commentaries by this prolific author are on the Svacchanda-tantra, the Vijñāna-bhairava, the Spanda-kārikā-s and the Śiva-sūtra-s.

Pratyabhijñāhṛdayam (hereafter Pr.hṛ.)

Utpalācārya's IPK, and Abhinavagupta's two commentaries the Laghvī and the Bṛhatī on IPK present the core of Kashmir Śaivism. Being massive and dense, it is difficult for the unprepared to understand them. On the contrary, Kṣemarāja's Pr.hṛ. is a short composition which condenses all the teachings on Kashmir Śaivism from IPK and Abhinavagupta's two commentaries, and presents the essence of the philosophy to a larger audience. It is as short as consisting of twenty sūtra-s, some as short as one line.

The term 'pratyabhijñā' means 'recognition.' Recognition or remembering what we have known already and always is the foundation of Kashmir Śaivism. 'Recognition' is normally understood as a function of memory. For instance, when we see a person in some public place, our memory connects our previous knowledge of that person. The spiritual process of 'recognition' is much more than normal recognition. In the spiritual process of recognition, there is not only memory of a previous knowledge, there is also the memory of the memory of the previous knowledge. That means, we not only remember our nature as the Self, we also remember that we remember that nature of ourself. This spiritual recognition restructures our self-experience and makes us aware of our nature as the Self which is divinity, which is blissfulness, which is Śiva. This leads us to realizing our liberation or wholeness as 'I am Śiva (Śivo'ham).'

### Introduction

In the Pr.hṛ., Kṣemarāja synthesizes the Trika-Kaula teachings of his guru Abhinavagupta about the Heart of Śiva and the process of tantric sādhana. In the process of pratyabhijñā, a veil of ignorance about the nature of oneself, the universe and transmigration is lifted, and infinite Śiva is recognized. Such a recognition takes place in the innermost infinite Heart (hṛdaya) of the individual. This innermost Heart is not the mere finite physical heart as we generally know. The innermost Heart is concealed to the physical eyes. It is the secret presence of the infinity within the finite individual. Thus, Kṣemarāja presents the fundamental core (hṛdaya) of the philosophy of 'Recognition' (pratyabhijñā). Hence the aptness of the title Pratyabhijñāhṛdayam, meaning 'the doctrine of Recognition'. Literally, the title means 'the Heart of Recognition.'

There are at least three interesting aspects in the work. — (i) Though the text is about the secret and process of pratyabhijñā, the central focus of the text is 'the absolute power of Consciousness' (citi-śakti) and not 'recognition.' In fact, the text commences with the term 'Cosciousness' (citiḥ) and the first sutra succinctly states in its single line: 'The absolute Consciousness is the cause of everything [external and internal]' (citiḥ svatantrā Viśva-siddhi-hetuḥ). (ii) The second aspect would confirm the first aspect. In that, the term 'pratyabhijñā' is not mentioned explicitly in any of the sūtra-s in the text; the term is mentioned once or twice in the commentaries on the text. (iii) Interestingly, the text comes with an auto-commentary. That is, for easy understanding Kṣemarāja provides his own commentary for each of the twenty sūtra-s.

The presentation here would consist of the sūtra-s along with a translation of the sutra-s. Kṣemarāja's auto-commentary in Sanskrit will be presented. However, for economy of space, this translator opts to present a brief explanation of the commentary. As is the tradition, we shall begin to study Pr.hṛ. with two benedictory verses.

Benedictory Verse (Maṅgala-śloka)

[मङ्गलश्लोकः]

नमः शिवाय सततं पञ्चकृत्यविधायिने।
चिदानन्दघनस्वात्मपरमार्थावभासिने ॥1॥

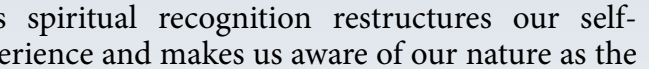

(Maṅgala-śloka – Translation)

Adoration to Śiva, who governs the five processes eternally, whose shines as the Highest Reality [or Highest Self] whose nature is a mass of Consciousness and Bliss.

Kṣemarāja's auto-commentary

Perhaps due to its simplicity, Kṣemarāja does not comment on the maṅgala-śloka.

We shall see the translator's explanation of the maṅgala-śloka in the next issue.

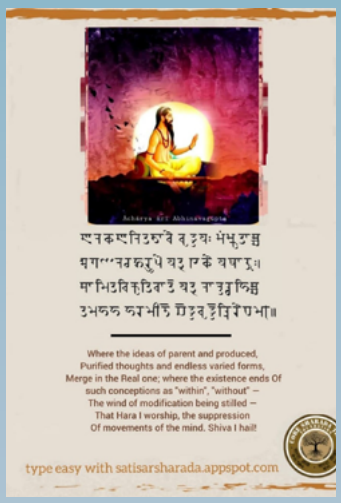

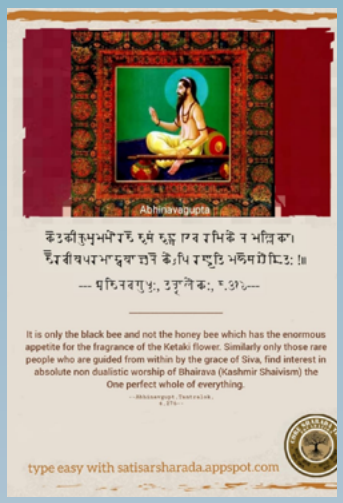

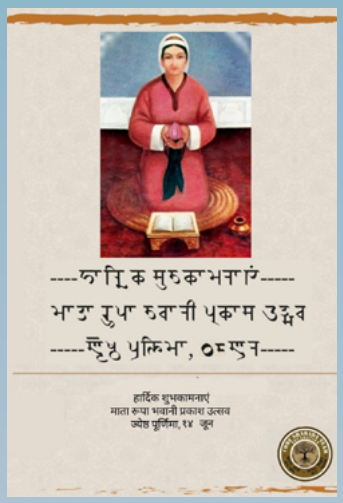

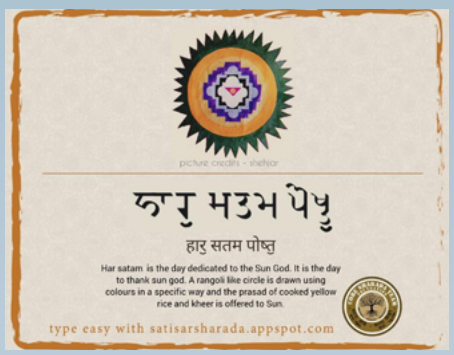

**शुर्यन हुंद्य बॉथ**

वह्यख आव, रह्यख कती कांगरे
ज़ेठ आव, ब्रेठ गयख कांगरे
हार आव, लार लजी कांगरे
श्रावुन आव, वावुन सूरय कांगरे
बांदुर आव, वांदुर लजी कांगरे
आशिद आव, कासिद सूज़मय कांगरे
कारतिक आव, नारु तिख लजिम कांगरे
मॉजिहोर आव, कंजि लजय कांगरे
पोह आव, तोह लोदुम कांगरे
माग आव, द्राग वोथुय कांगरे
च़िथुर आव, मथुर पशप्योय कांगरे ।




**DONATE**

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation
HDFC Bank,Airport Rd.,
Bangalure
Account No: 50200054809336
IFSC : HDFC0000075
(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)
Approval number- AAJCC1659DF20206
12-Clause (iv) of first provison to sub-section (5) of section 80G

## Activity Cart Of Previous Months

1) Koshur Praveshika, a primer for Kashmiri langauge in Sharada lipi launched on 19th June in presence of eminent personalities ; Dr. Sudhir Sopory, Ms Bhasha Sumbli and Dr. Chaman lal Raina.
2) Event in Bengaluru - Introduction of CST publications to community members done in presence of CST team members and our young student from June 2022 batch.
3) Kashmiri Cultural Heritage 48th awareness series on association with Kanchi Kamakoti Seva Foundation hosted an online online lecture on Revival of Sharada lipi.

## For Learning Sharada or any other suggestions:-

facebook.com/Core-Sharda-Team-110148770831539
instagram.com/coreshardateam
shardalipi.com
twitter.com/CoreSharada
maatrika.cst@gmail.com
Phone - 98301 35616 / 90089 52222